अहिंसात्मक कार्यधारा के लिये मार्गदर्शिका

एकता परिषद , भारत

International Center on Nonviolent Conflict

अहिंसात्मक कार्यधारा के लिये इस मार्गदर्शिका के लिये हम इंटरनेशनल सेंटर ऑन नॉन वायलेंट कॉन्फ्लिक्ट के सहयोग के लिये आभारी हैं

हम अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा के लिये समर्पित एकता परिषद के ग्रामीण नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के विशेष आभारी हैं - जिनके कार्यों और उपलब्धियों के आधार पर इस मार्गदर्शिका का निर्माण संभव हुआ।

अहिंसात्मक कार्यधारा के लिये मार्गदर्शिका
प्रथम प्रकाशन : अप्रैल 2020

संकल्पना और निर्देशन
राजगोपाल पी व्ही
जिल कार हैरिस

अनुवाद और संपादक
रमेश शर्मा
अंकुश वंगुरलेकर
ईशा चिटनिस

आवरण पृष्ठ और चित्रांकन
विक्रम नायक

फोटो
कुलदीप तिवारी
अंकुश वंगुरलेकर
साइमन विलियम्स

ग्राफ़िक डिज़ाइन
रौनक अग्रवाल
अंकुश वंगुरलेकर

प्रकाशक
एकता परिषद
ग्राम - सासाहोली, पोस्ट - तिल्दा नेवरा
जिला - रायपुर
छत्तीसगढ़, भारत
ektaparishad@gmail.com
www.ektaparishadindia.org

मुद्रण
प्रिंट फ़ोर्स
नई दिल्ली
(केवल निजी वितरण के लिये)

आइये साथ कदम बढ़ायें

अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा को प्रोत्साहित करने वाली यह मार्गदर्शिका निश्चित रूप से समाजसेवकों के लिए बहुपयोगी होगी ऐसा विश्वास है।

दुनिया सहित भारत में आज जब, वंचितों के पक्ष में खड़े होने का अर्थ अन्याय और हिंसा के विरुद्ध संघर्ष का पर्याय मान लिया गया है तब अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा के लिए समर्पित समाजसेवकों के समक्ष दुहरी चुनौती होती है। पहला, स्वयं अपने आप को अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा के लिए पूरी तरह समर्पित करना और दूसरा, उन वंचितों को अहिंसात्मक संघर्ष के लिए प्रेरित करना जिनके लिए यह न्याय, सम्मान और **अस्मिता** का सत्याग्रह है। संक्षेप में कहें तो यह अहिंसा के व्यक्तिगत अनुशासन से सामूहिक अहिंसात्मक प्रतिक्रियाओं का लंबा रास्ता है।

अहिंसा को मैं प्रयोग नहीं बल्कि अनुशासन मानता हूं। एक ऐसा अनुशासन जो व्यक्तिगत आचरण से सामूहिक आचरण की ओर अग्रसर होना चाहिये। सही अर्थों में अनुशासन और संयम दोनों ही महत्वपूर्ण साधन है जो सफलता और असफलता के बीच के फासले को तय करता है।

सत्याग्रह की तमाम तैयारियों में इसीलिए साधन की शुद्धि का सर्वोच्च स्थान है। वास्तव में सत्याग्रह को सफलता–असफलता के स्थापित नजरियों से अलग देखे जाने की जरूरत है। सत्याग्रह – संघर्ष का पर्यायवाची नहीं है। संघर्ष में तो जीत–हार का जरूरी पैमाना होता है लेकिन सत्याग्रह, सत्य के साधन को उत्तरोत्तर अग्रसर करने की अनथक यात्रा है। जहां सफलताएं महज एक और पड़ाव हैं। सत्याग्रही, आजीवन इस यात्रा का एक अनुशासित यात्री है।

आज से तीन दशक पहले एकता परिषद ने 'सत्याग्रह' का पथ चुना। ग्रामीण भारत में हजारों लोगों में अहिंसा का गहरा अनुशासन स्थापित कर देने से बड़ी और कोई सफलता हो ही नहीं सकती – एकता परिषद के अनथक प्रयास ने यह कर दिखाया। इसके बाद के जमीनी संघर्ष ने सफलताओं की ऐसी मिसालें कायम किए जिसनें हजारों–लाखों लोगों में अहिंसात्मक अभियानों के प्रति उम्मीदें भर दीं।

सफलताओं के पड़ावों ने आज एकता परिषद को उस मुकाम पर ला दिया जहां 'जय जगत' जैसी वैश्विक पदयात्रा का आयोजन हुआ। 1989 में सांची में जनमा एक जमीनी संगठन यदि आज एक स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संगठन बन गया तो उसकी मुट्ठीभर सफलताएं, समर्पित सत्याग्रहियों का एक पड़ाव भर है।

मैं, एकता परिषद को एक संगठन नहीं बल्कि 'अहिंसात्मक विचारों और कार्यों की पाठशाला' कहता हूं। जीवन की एक ऐसी पाठशाला जहां अहिंसा की सतत शिक्षा जारी है। आइए इस पुस्तिका के माध्यम से इस यात्रा में आप–हम सब षामिल हो जाएं।

मार्गदर्शिका को लिखने की प्रक्रिया

अप्रैल 2019 को एकता परिषद द्वारा सेंटर फॉर एक्सपीरिएंसिंग सोसिओ कल्चरल इंटरेक्शन (शशि केंद्र) मदुराई (भारत) में एक गहन संवादशाला आयोजित की गयी। इस संवादशाला में एकता परिषद के कार्यकर्ताओं सहित संगठनात्मक और व्यक्तिगत तौर पर समाज में न्याय और शांति स्थापित करने के लिए कार्यरत लगभग 40 लोगों को 4 दिनों के गहन विमर्श और संवाद के लिए आमंत्रित किया गया। इस संवादशाला का प्रमुख ध्येय एक ऐसी बहुपयोगी मार्गदर्शिका का निर्माण था जिसे अहिंसा की विचारधारा और कार्यधारा में हम एक संदर्भ के रूप में उपयोग कर सकें।

इसके पश्चात् एकता परिषद के राष्ट्रीय समन्वयक रमेश शर्मा और आदिवासी लाइव्स मैटर के अंकुश और ईशा के मध्य कई दौर की चर्चाएं हुईं और फिर लेखन तथा विश्लेषण की लंबी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप यह मार्गदर्शिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

यह मार्गदर्शिका मूलतः एकता परिषद के अपने गहन अनुभवों का सारांश है। कुछ सामग्री समान विचारधारा पर कार्यरत संगठनों और व्यक्तियों के भी हैं जो इस मार्गदर्शिका में लिखे गए हैं।

प्रस्तावना : राजगोपाल पी व्ही

मुझे खुशी है कि एकता परिषद द्वारा आयोजित संवादशाला के फलस्वरूप यह बहुपयोगी मार्गदर्शिका लिखी गई। मुझे विश्वास है कि यह मार्गदर्शिका वास्तव में अहिंसा के कला और विज्ञान को समझने में अनेक लोगों के लिए मददगार होगी – जो अहिंसा के मार्ग से समाजसेवा करना चाहते हैं।

आज हम उस दुनिया में रहते हैं जहां पूरी मानवता, मानव समाज और इस धरती को मिटाने के तमाम साधन वैज्ञानिकों ने तलाश लिए हैं। हम इस बात पर विस्मित भी हो सकते हैं लेकिन समझना जरूरी है कि आज हम उस मानव सभ्यता को समाप्त कर देने के मुहानें पर खड़े हैं जिसे विगत हजारों बरसों की यात्रा में हमने स्वयं बनाया था। और फिर सुरक्षा के नाम पर सभी वित्तीय, तकनीकी और भौतिक संपदाओं को झोंक दिया गया जिसके परिणामस्वरूप आज मानव और प्रकृति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह हैं।

निश्चित रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था जब तक युद्ध और उससे संबंधित प्रौद्योगिकी का पोषण करती रहेगी तब तक आर्थिक प्रतिस्पर्धा के नाम पर यह संकट बना रहेगा। असल चुनौती आज उन लोगों के सामने है जो अहिंसा पर आधारित समाज और दुनिया की रचना करना चाहते हैं। हमारे पास ऐसी कोई कुंजी नहीं है जिससे तुरंत विश्वशांति स्थापित हो जाए। बल्कि इसका सीधा–सरल रास्ता है कि हम पूरी दुनिया के हरेक लोगों के दिमाग में अहिंसा का बीज डाल सकें जो साहस के साथ विध्वंसकारी शक्तियों को संगठित चुनौती दे सके। विध्वंस का एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी है कि – प्रकृति के प्रति हमारा व्यवहार कितना मानवीय है।

इन परिस्थितियों में बदलाव के लिए जरूरी है कि हमारे अपने दैनिक जिंदगी में हिंसा और अहिंसा के प्रत्येक पक्ष को हम सब गंभीरता के साथ समझें और ठीक करने की ओर आगे बढ़ें। व्यक्तिगत और सामूहिक चेतना के अगले स्तरों पर आगे बढ़ते हुए ही हम उस हिंसा को समाप्त कर सकते हैं जो मानव और प्रकृति दोनों के अस्तित्व के लिए एक गहरी चुनौती है।

यह तभी संभव है जब हम सब मिलकर बड़े पैमाने पर लोगों और खासकर युवाओं को प्रेरित करना प्रारंभ करें। मुझे विश्वास है यह मार्गदर्शिका इन प्रयासों में महत्वपूर्ण होगी। विशेष रूप से उन कार्यकर्ताओं के लिए जो प्रत्यक्ष हिंसा के विरुद्ध शांति के लिए सतत प्रयासरत हैं। मार्गदर्शिका में लिखित और सुझाए गए रास्ते निश्चित ही अहिंसा की नई समझ विकसित करेंगे जिसे जिंदगी में उतारा जा सकता है।

मैं आप सबको आमंत्रित करना चाहता हूं कि इस मार्गदर्शिका को स्वयं उपयोग करें और दूसरों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। आयोजित प्रशिक्षणों में इसे एक संदर्भ मार्गदर्शिका के रूप में प्रयोग करें। इसमें वर्णित रणनीतियों का उन सभी परिस्थितियों में पालन करने का प्रयास करें जो अहिंसा के मार्ग में हिंसात्मक चुनौतियाँ हैं। अपने अनुभवों को बताए गए मार्गों के माध्यम से और अधिक व्यवहारिक किसी भी

परिस्थितियों के लिए कारगर बनाएं। विगत 40 वर्षों के दौरान अनेक छोटे संगठनात्मक प्रयासों से लेकर कई बड़े जनांदोलनों तक हमने लंबा रास्ता तय किया है। इन सबमे अहिंसा के विचारधारा और कार्यधारा का गहन प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी कदम रहा। हमने विगत अनेक अभियानों में अहिंसा के इस प्रशिक्षण की मिसालें देखी हैं। अहिंसात्मक अभियानों में प्रतिबद्धता और त्याग निश्चित ही अभियानों को सफलता के एक प्रामाणिक स्तर पर लेकर जाती है। विपरीत परिस्थितियों में भी संवाद के प्रति आग्रह ने निरपेक्ष और विरोधियों को भी अंततः हमारे अहिंसा के तर्कों को सुनने के लिए तैयार कर लिया। अपने हरेक कार्यों से सीख वास्तव में अहिंसा के प्रति हमारी समझ को और गहन करती है। हरेक परिस्थितियों में सीखने की हमारी तैयारी ही अहिंसा के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत बनाती है और अधिकाधिक लोगों से जोड़ने में मदद करती है। एकता परिषद के एक आम सदस्य के जीवनचर्या में आप अहिंसा के प्रबल पक्ष को देख सकते हैं। मुझे विश्वास है कि यह मार्गदर्शिका उन सभी के सीख और सफलताओं को आप सबके सामने रखेगी।

अंत में मैं मार्गदर्शिका के लेखक रमेश शर्मा (एकता परिषद) तथा अंकुश और ईशा की टीम को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होनें सफलतापूर्वक इस मार्गदर्शिका को लिखा – जो एकता परिषद के परखे हुए अनुभवों पर आधारित है। मैं चाहता हूं कि अहिंसा के लिए कार्यरत उन सभी को इस मार्गदर्शिका का उपयोग करना चाहिए। मैं यह भी चाहता हूं अलग मत रखने वाले उन लोगों को भी इसे पढ़ने और समझने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अहिंसा के प्रति उनकी समझ विकसित हो सके। संभव है तो आप सब कुछ वक्त के लिए रुकें और अहिंसा की आवश्यकता को समझने की शुरुआत करें। यह समय हम सबके लिए अहिंसा के नए अवसरों को समझने और अपनाने की शुरुआत हो सकती है ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए हम सब मिलकर एक बेहतर कल का निर्माण कर सकें।

राजगोपाल पी व्ही

(संस्थापक – एकता परिषद)

सारांश

यह मार्गदर्शिका मुख्य रूप से अहिंसा के लिए कार्यरत लोगों के लिए बनाई गई है। कुछ सामग्रियां ऑनलाइन उपलब्ध हैं। यह मार्गदर्शिका विगत तीन दशकों से एकता परिषद के द्वारा किए गए अनेक अभियानों के व्यवहारिक अनुभवों और सीखों पर आधारित है। इसमें ज्यादातर उदाहरण भारत के ही हैं किन्तु दुनिया के कई क्षेत्रों में विभिन्न परिस्थितियों में भी यह प्रासंगिक होगा ऐसा हम मानते हैं। यह मार्गदर्शिका कई अवधारणाओं, सिद्धांतों और रणनीतियों की सरल व्याख्या करती है जिसे एकता परिषद द्वारा व्यवहारिक रूप से अमल में लाया गया। इसमें अनेक समकालीन वैश्विक उदाहरणों को भी शामिल किया गया है जिससे सीख ली जा सकती है। यह मार्गदर्शिका विशेष रूप से प्रेरित करती है कि इसके पठन को हम ऐसी यात्रा के रूप में लें जो स्वयं अपने और हमारे संगठन के भीतर झांकनें का अवसर देती है। ऐसी सभी यात्राओं के लिए यह मार्गदर्शिका एक महत्वपूर्ण संदर्भ है।

इस मार्गदर्शिका का सरल प्रस्तुतीकरण आसानी से कही और लिखी गई बातों को समझने में मददगार होगी ऐसा विश्वास है। मार्गदर्शिका के हरेक अध्याय में अहिंसा के व्ययवहारिक सिद्धांतों को भारतीय और वैश्विक उदाहरणों से स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। प्रत्येक अध्याय में फोटो और चित्र भी दिए गए हैं जो बातों को आसानी से समझने में मददगार होंगे। प्रत्येक अध्याय के अंत में चुनिंदा प्रश्न दिए गए हैं जिससे स्वयं की समीक्षा की जा सकती है। यह समीक्षा व्यक्तिगत और समूह दोनों स्तरों पर की जा सकती है।

विषय तालिका

हिंसा के व्यापक संरचनात्मक मुद्दे 1

अहिंसा एक जीवनपद्धति है 7

अहिंसात्मक कार्यधारा कैसा दिखाई देता है 10

अहिंसा : एक जीवनपद्धति बनाम राजनैतिक रणनीति 14

अहिंसा को कैसे हम व्यक्तिगत आचरण से संगठन के स्तर पर ले जा सकते हैं 17

1. लोकतंत्र का निर्माण
2. नेतृत्व का निर्माण
3. अभियान की तैयारी

अहिंसात्मक अभियानों के सिद्धांत क्या हैं 25

संगठित अहिंसात्मक कार्यधारा के तीन महत्वपूर्ण अंग 29

1. संघर्ष
2. संवाद
3. रचना

आगामी चरण 43

हिंसा के व्यापक संरचनात्मक मुद्दे

हिंसा के व्यापक संरचनात्मक मुद्दे

जब कभी हम हिंसा की बात करते हैं तो हमारे सामने प्रत्यक्ष और दिखाई देने वाली हिंसा का पक्ष होता है। यह समझ में आने लायक है क्योंकि हम वीभत्स हिंसा और उसके दर्दनाक स्वरूप को अक्सर देखते हैं। सामान्य तौर पर संस्थागत और व्यक्तिगत स्तरों पर होने वाली हिंसा हमें आसानी से दिखाई देती है और समझ में आती है। प्रत्यक्ष और दिखाई देने वाली हिंसा वास्तव में हिंसा का सबसे अधिक दिखता हुआ पक्ष है। जब भी हम हिंसा की चर्चा करते हैं तो सामने एक युद्ध की हिंसक परिस्थितियों से लेकर घरेलू स्तरों पर जारी खून–खराबा आदि के अनेक पक्ष सामने आते हैं। साधारणतः किसी के भी मन मस्तिष्क में हिंसा की यही तस्वीरें होती हैं। दुनिया में अनेक संगठन ऐसे प्रत्यक्ष हिंसा के विरुद्ध और उससे प्रभावित लोगों के साथ काम करती हैं।

लेकिन जब हम अहिंसात्मक कार्यधारा की बात करते हैं तो इसका अर्थ केवल प्रत्यक्ष हिंसा के विरुद्ध काम करना नहीं है। निश्चित रूप से यह बहुत जरूरी है कि संस्थागत हिंसा और उससे उपजे अलगाव, गरीबी, विपन्नता और अवसरों के भेदभाव आदि के विरुद्ध भी खड़े हुआ जाए। इसके लिए जरूरी है कि उन सामाजिक–राजनैतिक परिस्थितियों और उसके तंत्र को भी पूरी तरह समझें। भारतीय परिदृश्य में आज भी बहुसंख्यक लोग प्रकृति पर आधारित जिंदगी जीते हैं और अपने पहचान, सम्मान और आजीविका को प्राकृतिक संपदा आधारित मानते हैं। इन समुदायों ने वास्तव में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और दोहन की नायाब संस्कृति विकसित की है जो उनकी मजबूत लोकतांत्रिक प्रक्रिया से संचालित होती है। विगत कुछ दशकों में इन्हीं संसाधनों के केन्द्रीकरण, बाजारीकरण, अनियंत्रित दोहन और उस पर आधारित पूरा एक नया तंत्र खड़ा कर दिया है। परिणामस्वरूप इस नए तंत्र ने सदियों से जारी समुदाय की व्यवस्था को लगभग नष्ट कर दिया। इसने एक नए तरह के हिंसा और विवाद को जन्म दिया। चूंकि राज्य और औद्योगिक प्रतिष्ठानों ने मिलकर विकास का नया मॉडल विकसित किया इसलिए समुदायों के हाथों से संसाधनों के अधिकार और उनके पहचान, सम्मान और आजीविका के अवसर समाप्त होते गए। इस नई व्यवस्था ने समुदाय से जल जंगल और जमीन अर्थात उनके जीविकोपार्जन के संसाधन और अवसर दोनों ही छीन लिए।

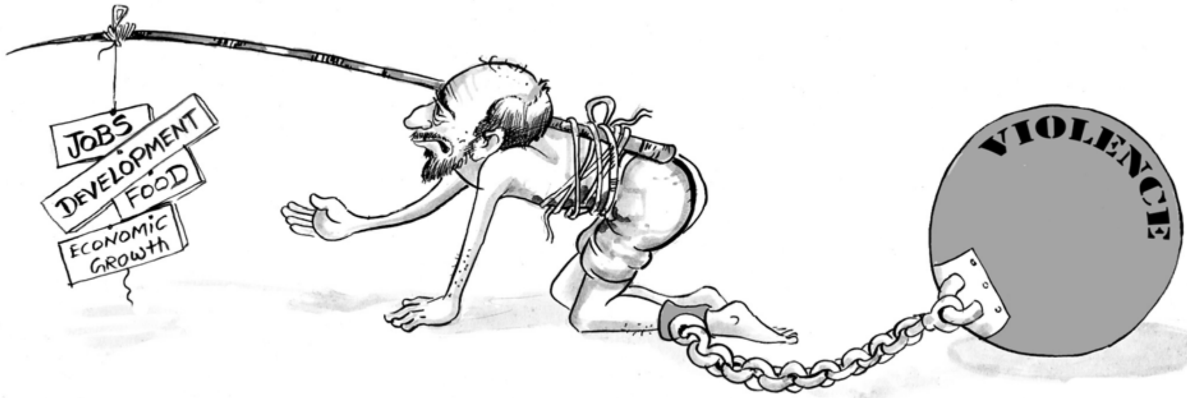

उदाहरण

जब उत्खनन के नाम पर बहुत से गावों को बलपूर्वक खाली कराया जाता है। विस्थापित लोगों के पुनर्वास और व्यवस्थापन की कोई व्यवस्था नहीं की जाती और संबंधित उत्खनन कंपनी को बेहिसाब मुनाफा कमाने के लिए खुला छोड़ दिया जाता है तब संसाधनों के अधिकार और अवसरों की असमानता के संकट खड़े होते हैं। इन परिस्थितियों में जब ग्रामवासी एकत्र होकर अधिग्रहण का विरोध करते हैं तब स्थानीय प्रशासन अक्सर कड़ाई से पेश आता है और पुलिस बल आदि की मदद से विरोध को दबाया जाता है। ग्रामवासियों के घायल होने अथवा जानमाल की क्षति होने पर लोग बदले की कार्यवाही के लिए खड़े हो जाते हैं। ऐसे में ज्यादातर अहिंसात्मक तरीके से विरोध करने वाले भी कभी–कभी हिंसात्मक प्रतिक्रिया शुरू कर देते हैं। इन प्रतिक्रियाओं को कानून और व्यवस्था का मसला मानकर हिंसा को हिंसात्मक तरीके से ही नियंत्रित करने की कोशिश की जाती है। लेकिन इसका सरल विश्लेषण यही है कि अपने संसाधनों और अवसरों के समाप्त होने के खतरे की वजह से लोग प्रतिक्रिया करते हैं। सारांश यही है कि अवसरों और संसाधनों का अनुचित एकाधिकार कुछ परिस्थितियों में हिंसा का कारण बन जाता है।

चित्र : ओडिशा में टाटा कंपनी के लिए हुए अधिग्रहण का विरोध करते हुए ग्रामवासियों और पुलिस के बीच विवाद में 12 ग्रामवासी हताहत हुए (2006)

विकास के इस नए मॉडल ने हिंसात्मक तरीके से सम्पन्नता और विपन्नता की दीवारें खड़ी करदीं। एकता परिषद इस नई हिंसा के विरुद्ध एक अहिंसात्मक अभियान का अग्रणी जनसंगठन है।

संसाधनों और अवसरों के एकतरफा अधिग्रहण ने विगत वर्षों में अनेक हिंसक विवादों को जन्म दिया है जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग जड़विहीन हो गए। एकता परिषद इन विवादों के कारण स्वावलम्बी लोगा के वंचित हो जाने को

महत्वपूर्ण चुनौती मानती है। वंचित होने से हमारा तात्पर्य केवल आर्थिक वंचना नहीं वरन सांस्कृतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वंचना भी है। जब मध्यप्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय पार्क से जैवविविधता संरक्षण के नाम पर बैगाओं को बेदखल किया गया तो हजारों बैगा आदिवासियों ने केवल अपनी जमीननहीं बल्कि अपनी नैसर्गिक और सांस्कृतिक पहचान भी खो दी। एकता परिषद के व्यापक संगठनात्मक कार्यों में इस वंचना को संरचनात्मक अन्याय का आधार मानते हुए – इसे अहिंसात्मक तरीके से हल करने के सतत प्रयास किए गए हैं।

जब एकता परिषद ने इन सवालों का समाधान तलाशने का रास्ता चुना तो प्रारंभ से ही एक ऐसे संगठनात्मक ढांचे का निर्माण हुआ जो एक छतरी की तरह अहिंसा के विभिन्न विचारधारा और कार्यधारा को समाहित कर सके। जहां व्यक्तिगत सदस्य से लेकर संस्थागत इकाई और समूहों के साथ काम करने वाले, सब एक छतरी के नीचे मिलजुलकर कार्य कर सकें। एकता परिशद को एक परिवार भाव से निर्मित किया गया है जहां छतरीनुमा संगठन के ढांचे तले सब एकता की ताकत और भावना को महसूस कर सकें। एक ऐसा परिवार जहां लिंगभेद न हो, ऊंचे और निचले स्तरों का विभाजन न रहे। विचारधारा व कार्यधारा इतनी सरल हो कि एक छोटा बच्चा अथवा बुजुर्ग व्यक्ति भी आसानी से समझ सके।

एकता परिषद ने प्रारंभ से समुदायों के जरूरतों और परिस्थितियों पर आधारित संगठन निर्माण के रास्ते को चुना जिसका प्रारंभिक मकसद जागरूक जनता तैयार करना रहा। जागरूकता को व्यापक और प्रभावी बनाते हुए राज्य से संवाद की संभावनाएं और तरीके विकसित किए गए। इन संगठनात्मक प्रयासों का लक्ष्य रहा कि वंचितों के हित में राज्य को ऐसी नीतियां–कानून और व्यवस्था बनाने के लिए दबाव डाला जाए जिससे संसाधनों और अवसरों की समानता के लोकतांत्रिक समाधान तैयार हों।

कुछ बरस पहले जब शांति और अहिंसा के मुद्दे पर कार्य करने वाली प्रतिष्ठित संस्था इंटरनेषनल

चित्र : जन–जन का यह नारा है – एकता परिषद हमारा है

सेण्टर ऑन नॉन वायलेंट कॉन्फ्लिक्ट के निदेशक डॉ. हार्डी ने एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक रमेश शर्मा से सवाल किया कि वो एकता परिषद को कैसे परिभाषित करना चाहते हैं। तब रमेश शर्मा का जवाब था कि – 'एकता परिषद अहिंसा के विचारधारा और कार्यधारा की एक पाठशाला है।

यकीनन यदि आप **केवल** संगठन के नजरिए से एकता परिषद को देखने का प्रयास करेंगेतो एकता परिषद की समग्रता को समझना कठिन होगा। आपको इसे एक परिवार की तरह देखना होगा जहां बुनियाद, परस्पर विश्वास पर आधारित **होता है।** इसे गतिशील निकाय के रूप में भी देखना चाहिए जो अहिंसा और शांति के गहरे विचारधारा और कार्यधारा पर खड़ी है। एकता परिषद एक ऐसे जनसंगठन के रूप में यह लगातार विकसित होती रही है जहां संगठनात्मक तौरतरीकों में परिस्थितियों के अनुसार बदलाव हुए। एकता परिषद कभी किसी स्थायी ढांचे का रूप न लेकर हमेशा एक खुले प्रवाह के स्वरूप को स्वीकार किया। वास्तव में एकता परिषद अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा की ऐसी बुनियाद सबके लिए मुहैया करती है, जहां खड़े होने वाले किसी भी संगठनात्मक स्वरूप को हम वहां की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप नाम और पहचान दे सकते हैं। यही एकता परिषद की संगठनात्मक व्याख्या है।

एकता परिषद का विश्वास है कि एक जनसंगठन के रूप में हमारी दिशा निश्चित ही – अन्याय और हिंसा से संबंधित ढांचागत सवालों के जवाब तलाशने की होनी चाहिए। प्रत्येक परिस्थितियों में स्थानीय विविधता (भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आदि) के आधार पर संगठनात्मक प्रयास अलग–अलग हो सकते हैं। हमें मानना चाहिए कि दो अलग–अलग राज्यों और देशों की परिस्थितियां अक्सर एक जैसी नहीं होती हैं इसीलिए संगठन का स्वरूप निश्चित ही वहां की परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए।

एकता परिषद का मानना है कि ढांचागत या संरचनात्मक हिंसा समाप्त करने वाले संगठन के लिये यह जरूरी है कि वह अपने अभियान को परिस्थितियों के अनुरुप स्वयं निर्धारित करे। इस संदर्भ में भाषा, भूगोल, राजनैतिक स्थिति आदि की विविधता का सटीक आकलन ज़रूरी है। भारत जैसे विविधता से भरपूर देश में असम मे संभव हो सकने वाले अभियान सुदूर केरल राज्य में भी उन्हीं तरीकों से होंगे यह संभव नहीं है क्यूँकि दोनों ही राज्यों के अनेक संदर्भ काफी अलग है।

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि स्व–अनुशासन 'अहिंसा' के लिए महत्वपूर्ण है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आपको लगता है कि आपके अहिंसक विचार – बदलाव के साधन हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आपकी अहिंसक भाषा – बदलाव का जरूरी साधन है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप अपने अहिंसात्मक व्यवहार से दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

अहिंसा एक जीवन पद्धति है

अहिंसा एक जीवन पद्धति है

दुनिया भर में अहिंसा को एक रणनीतिक चुनाव के रूप में देखा और माना जाता है। लेकिन भारतीय सन्दर्भों में अहिंसा मूल रूप से 'जीवन पद्धति' है। यदि अहिंसा हमारे अपने विचार और व्यवहार में नहीं है तो इसे संगठनात्मक स्वरूप में कैसे ढाला जा सकता है? हम इसे संस्कृत के तीन महत्वपूर्ण शब्दों और भावों से समझ सकते हैं – मनसा, वाचा और कर्मणा। अहिंसा हमारे मन और विचारों से, वचन और संवाद से तथा व्यवहार से आत्मसात करना आवश्यक है। भारत तथा सांस्कृतिक रूप से जुड़े पूर्वी देशों में इसलिए अहिंसा को जीवन पद्धति कहा गया कि जब तक उसे हम स्वयं नहीं अपनाते हैं अर्थात मन से – वचन से और कर्म से उसका पालन नहीं करते हैं तब तक अहिंसा का बाहरी उपयोग केवल एक प्रयोग ही होगा। वास्तव में अहिंसा के मूल्यों के लिए काम करने वाले संगठनों के हरेक सदस्यों के भीतर यह व्यावहारिक परिवर्तन होना ही चाहिए। ध्यान रहे कि मन से–कर्म से और वचन से अहिंसा को आत्मसात करते रहना ही अपने आपको निजी और संगठनात्मक जीवन के लिए बेहतर तौर पर तैयार करना है। महात्मा गांधी ने कहा था कि बदलाव अथवा परिवर्तन के लिए हम किन साधनों का इस्तेमाल करते हैं यह बेहद महत्वपूर्ण है। अहिंसात्मक बदलाव में यह साधन 'व्यक्तिगत आचरण' है अर्थात जितनी निष्ठा के साथ हम अहिंसा के पक्ष पर सोचते हैं – अहिंसात्मक भाषा का इस्तेमाल करते हैं – और अहिंसात्मक व्यवहार करते हैं, हमारे अहिंसा की ताकत उतनी ही मजबूत होती जाती है। अहिंसा के इस 'व्यक्तिगत आचरण' में त्याग बेहद महत्वपूर्ण साधन है।

एकता परिषद का संगठनात्मक स्वरूप एक परिवार की तरह है। अक्सर परिवार में गलतियों के लिए सजा देने के बजाए – सुधरने के दिए जाने को प्राथमिकता दी जाती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि हमें अपनी गलतियों को सुधारने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। यह आत्मावलोकन और आत्मशुद्धि का मार्ग ही अहिंसा के विचार और व्यवहार को मजबूत बनाता है। यह व्यक्ति और संगठन निर्माण दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। एकता परिषद में इस प्रक्रिया और मूल्य को हमेशा प्रमुखता दी जाती है – एक परिवार की तरह।

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि स्वअनुशासन, अहिंसा के लिए जरूरी है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आपके अहिंसात्मक विचार, बदलाव के साधन हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आपकी अहिंसक भाषा/संवाद, बदलाव के लिए साधन है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप अपने स्वयं के अहिंसात्मक व्यवहार से दूसरों को प्रेरित करना चाहते हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

अहिंसात्मक कार्यधारा कैसा दिखाई देता है?

अहिंसात्मक कार्यधारा कैसा दिखाई देता है?

आदर्श स्वरूप में अहिंसात्मक कार्यधारा – व्यक्ति से संगठनात्मक बदलाव की ओर अग्रसर होना चाहिए। अर्थात यह हमारे अपने व्यक्तित्व और व्यवहार के साथ–साथ संगठन के सभी सदस्यों में बदलाव के रूप में आगे बढ़ना चाहिए तभी हम क्रमशः समाज को भी अहिंसा के लिए तैयार कर पाएंगे।

अहिंसा की यह कार्यधारा का मूल – आत्मावलोकन अथवा स्वयं की समीक्षा और सुधार से शुरू होता है। अहिंसा में विश्वास करने वाले हरेक कार्यकर्ता के लिए यह जरूरी होता है कि वह व्यक्तिगत जिंदगी के उन समस्त पक्षों को अहिंसा के नजरिए से देखना और मानना शुरू करे जो उसके अहिंसात्मक व्यवहार को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं।

योग और ध्यान को प्रोत्साहित करने वाले लोग भी यही कहते हैं कि – आत्मावलोकन की प्रक्रिया हमें बेहतर मार्ग में बढ़ने के लिए जरूरी है।

कई परिस्थितियों में हम मान लेते हैं कि अहिंसा का बाहरी प्रदर्शन ही सब कुछ है। उदाहरणस्वरूप हम देखते हैं कि 'बाल अधिकारों' पर कार्य करने वाले कई बार स्वयं अपने परिवार के बच्चों के साथ जाने अनजाने हिंसक व्यवहार कर डालते हैं।

हम अपने कार्यों के सही प्रवक्ता अथवा नेतृत्व तभी हो सकते हैं जब स्वयं उसे व्यक्तिगत, पारिवारिक और फिर संगठनात्मक स्तरों पर क्रमशः अपनाएं। इसके बाद ही समाज से हम सही अर्थों में परिवर्तन का आग्रह कर सकते हैं। इसलिए आत्मावलोकन की यह प्रक्रिया सतत चलती रहनी चाहिए।

हमें अपने स्वयं की जिंदगी में हिंसा के हरेक छोटे बड़े पक्ष को धीरे–धीरे समाप्त करना चाहिए।

अहिंसात्मक कार्यधारा में आगे बढ़ने के आवश्यक है कि कार्यकर्ता पहले स्वयं अपने आचरण के भीतर हिंसा की समीक्षा करे।

प्रशन

क्या आप दूसरों के प्रति संवेदनशीलता को महत्वपूर्ण मानते हैं ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि दूसरों के प्रति संवेदनशील होना– अहिंसा के लिए जरूरी है ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि समूह और संगठन को अहिंसक बनाना हमारी जवाबदेही है ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि समूह और संगठन के लोगों को प्रशिक्षण द्वारा अहिंसात्मक बनाया जा सकता है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

सत्य के पक्ष की तलाश

हरेक कार्यकर्ता के जीवन में वह क्षण आता है जब उसे अहसास होता है कि अब उसकी जिंदगी का मकसद, केवल व्यक्तिगत विकास नहीं है। यह अहसास – समुदाय और समाज में बदलाव की प्रेरणा को प्रोत्साहित करती है। इस अहसास अथवा मूल भावना को हमेशा गांठ बांधकर याद रखना बेहद जरूरी है कि ऐसा क्या था जिसने आपको शुरूआती प्रेरणा दी। यही सत्य के पक्ष की तलाश या उसकी यात्रा की शुरूआत है।

ऐसी कौन सी भावना थी जिसने आपको कुछ बदलाव करने के लिए उकसाया? क्या आपके जीवन अथवा आसपास ऐसी कोई घटना थी जिससे आप में यह भावना आई? सही अर्थों में यही भावनाएं ही आपके लिए आजीवन ऊर्जा का स्रोत बनी रहती हैं जो हमें स्वयं को बदलने के लिए प्रेरित करती है। संक्षेप में कहें तो यही बुनियादी भावना – हमारे अपने बदलाव का दर्पण होता है। सत्य के इस पक्ष की तलाश हममें से हरेक के लिए बेहद जरूरी है।

उदाहरण

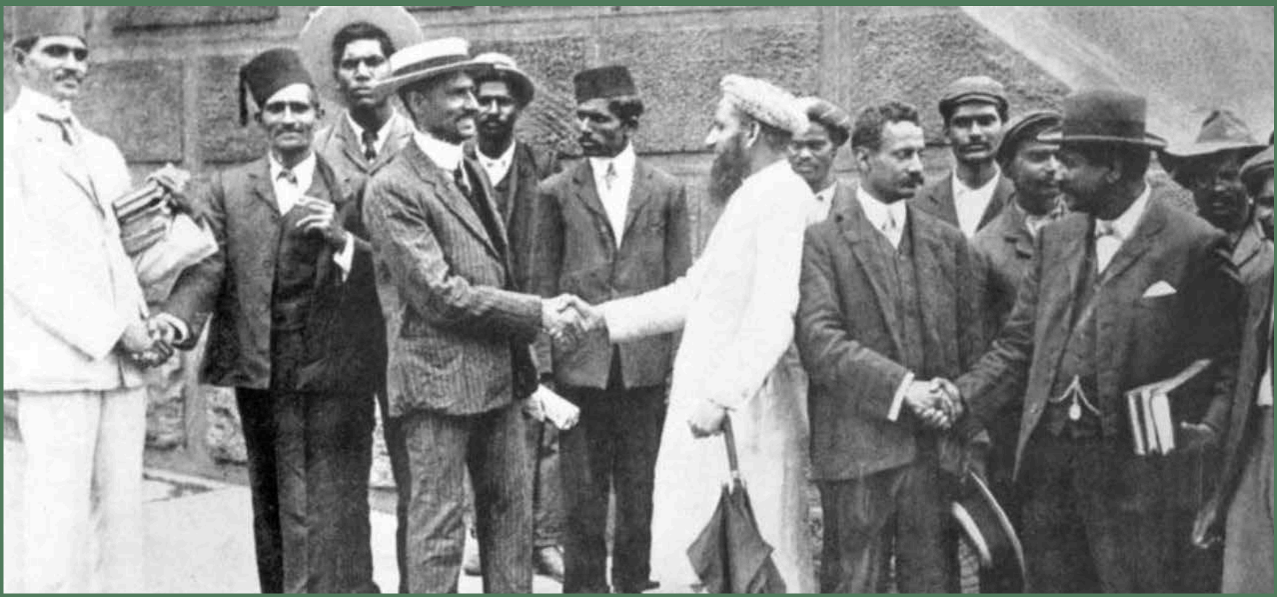

चित्र : दक्षिण अफ्रीका में अपने साथियों से मिलते हुए महात्मा गाँधी

गांधी जी के लिए वह 7 जून 1983 था। उस दिन वे ट्रेन से दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया जा रहे थे। एक श्वेत व्यक्ति ने गांधी जी के समक्ष अभद्रता से सवाल किया कि आखिर वे प्रथम श्रेणी में कैसे यात्रा कर रहे हैं?

बावजूद वैध टिकट के गांधी जी को ट्रेन से बाहर उतार दिया जाता है। उसी क्षण गांधी जी संकल्प लेते हैं कि वे अपने और अपनी तरह हजारों लोगों के अधिकारों के लिए अहिंसात्मक संघर्ष करेंगे।

अहिंसा एक जीवनपद्धति बनाम राजनैतिक रणनीति

अहिंसा : एक जीवनपद्धति बनाम राजनैतिक रणनीति

पूर्वी देशों के संस्कृति में अहिंसा को मूलतः जीवनपद्धति के रूप में माना गया है। जहां व्यवहार में सतत सकारात्मक परिवर्तन, अहिंसा का परिणाम होता है। व्यक्तिगत और फिर समूहगत स्तरों पर यह परिवर्तन संगठनात्मक स्तरों पर भी होना चाहिए। भारतीय संस्कृति और दर्शन के अनुसार हमारे कार्य के मूल में 'मनसा–वाचा–कर्मणा' का सूत्र होता है। अर्थात हम जैसा सोचते और बोलते हैं वैसा ही व्यवहार भी करते हैं। भारतीय संदर्भों में अहिंसा – मन, वचन और कर्म के साधनों से आती है।

हमारे व्यक्तिगत आचरण में इस सकारात्मक परिवर्तन के साथ ही हम संगठन में भी अहिंसा के आचरण को ढाल सकते हैं।

महात्मा गांधी मानते थे कि समाज से जुड़कर अहिंसा के मार्ग में काम करने वाले हरेक के भीतर यह सकारात्मक परिवर्तन होना ही चाहिए। मनसा–वाचा–कर्मणा में सकारात्मक परिवर्तन जितना गहन होगा उतने ही हमारे कार्य और सफलता का दायरा बड़ा होता जाएगा। एक संगठन के निर्माण और विस्तार में भी यही सिद्धांत लागू होता है।

मनसा – वाचा – कर्मणा मनुष्य में अहिंसा के सतत विकास का मार्ग

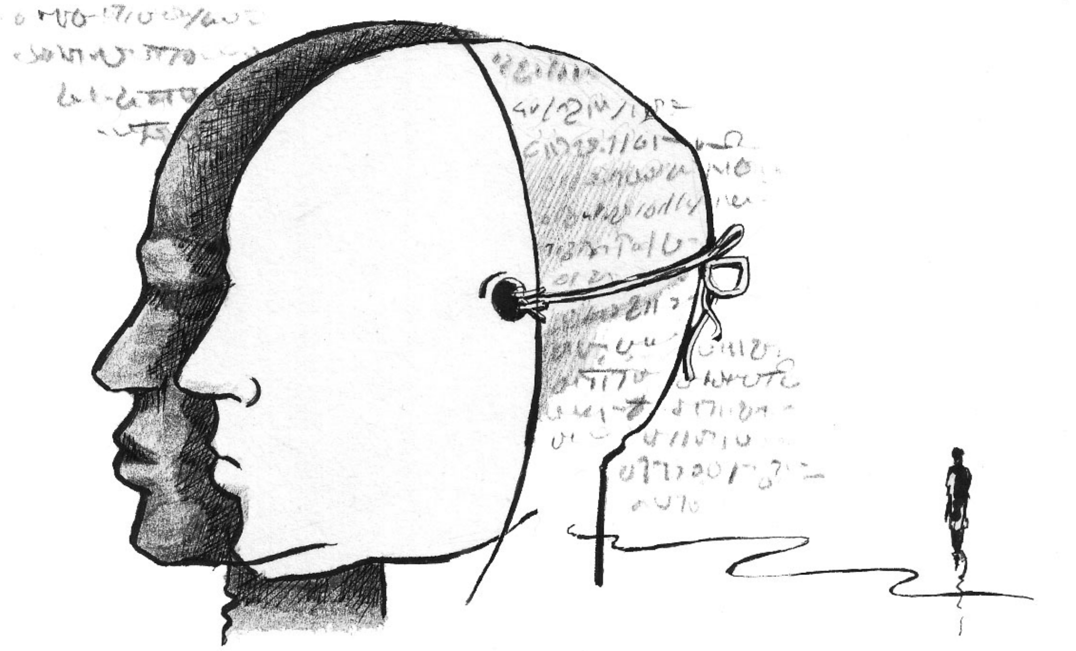

उदाहरण

अन्ना हजारे :

एक अहिंसात्मक जीवन

किशन बाबूराव हजारे जिन्हें हम अन्ना हजारे के नाम से जानते हैं, महाराष्ट्र और देश दुनिया में एक चर्चित शख्शियत है। एक गांधीवादी अहिंसक कार्यकर्ता होकर उन्होंने अपने गांव 'रालेगण सिद्धि' में जो सकारात्मक बदलाव लाया वो दुनिया भर में जानी जाती है। विगत वर्षों में उन्होंने एक महत्वपूर्ण भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का नेतृत्व किया। इस अभियान का एक महत्वपूर्ण मांग था – जन लोकपाल कानून को लागू करवाना। यह कई अर्थों में एक सफल अहिंसक अभियान के रूप में जानी जाती है। अन्ना हजारे के जीवन का निर्णायक मोड़ आता है जब – सैन्य सेवा से अवकाश के बाद 1975 में वे अपने गांव लौटते हैं। अपने गांव रालेगण सिद्धि लौटकर वो निश्चय करते हैं कि गांव के ही एक मंदिर में वो रहेंगे। उन्होंने स्वयं यादवबाबा मंदिर का निर्माण किया और वहीं रहकर आज तक अनेक अहिंसक अभियानों को नेतृत्व देते रहे हैं। अनेक अवसरों पर सार्वजनिक रूप से वो कहते हैं कि – मैं तो एक फकीर हूं जिसके जिंदगी का एकमात्र मकसद अपने देश और देशवासियों की तन–मन–ध्ान से सेवा है। उनका यह सादा जीवन और समर्पण अहिंसा को मानने वाले हजारों लोगों के लिए एक सच्ची जीवंत प्रेरणा है।

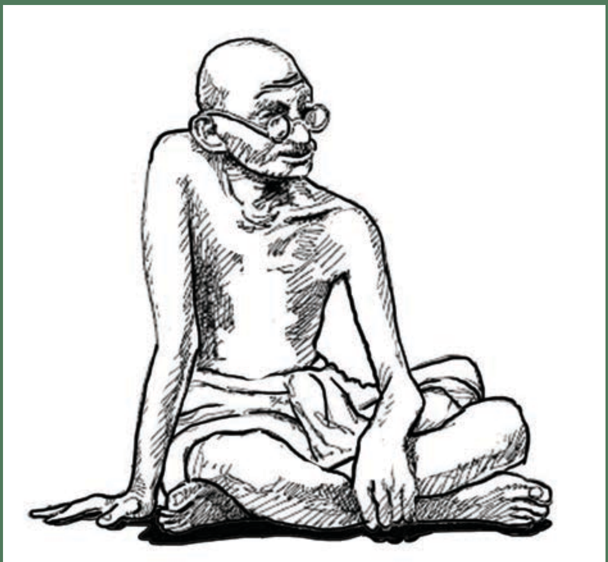

महात्मा गांधी और उनकी अहिंसात्मक कार्यधारा

भारत में जन्म लेकर इंग्लैंड में वकालत की पढ़ाई पूरी करके दक्षिण अफ्रीका में वकालत करते हुए उन्होंने धीरे–धीरे अपने विचार और व्यवहार को समाजसेवा से जोड़ा। भौतिक साधनों को छोड़नें के साथ–साथ, उन्होंने निश्चय किया कि औपनिवेशिक गुलाम बनाने वाली व्यवस्था को चुनौती देना है। प्रारंभ से ही उनका मंत्र था कि उस पूरी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था का समग्र बहिष्कार जरूरी है जो किसी भी तरह की गुलामी को पोषित करती है। उन्होंने शुरू से अभियानों में सरल और आत्मनिर्भर जीवन को केंद्र में रखा और फिर आजीवन इसका पालन करते हुए पूरी दुनिया को अहिंसा का सफल रास्ता दिखाया।

अहिंसा को कैसे हम व्यक्तिगत आचरण से संगठन के स्तर पर ले जा सकते हैं?

अहिंसा को कैसे हम व्यक्तिगत आचरण से संगठन के स्तर पर ले जा सकते हैं?

व्यक्तिगत स्तरों से आगे बढ़ने वाली अहिंसा की सोच और आचरण – स्वाभाविक रूप से सामूहिक स्तर पर भी बढ़ती है। अहिंसात्मक कार्यधारा में इस प्रक्रिया को संगठनात्मक स्वरूप देना जरूरी होता है। सामान्यतया ढांचागत हिंसा (गरीबी, अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि) के विरुद्ध खड़े होने वाले संगठनों और उनके अभियानों में यही अहिंसक कार्यधारा और विचारधारा रणनीति सफलता दिलाती हैं। इसलिए संगठनों और संगठित अभियानों में अहिंसा को महत्वपूर्ण अनुशासन माना जाता है।

व्यक्तिगत स्तर से समूह और संगठन के स्तरों पर अहिंसा के आचरण के प्रसार के कई रास्ते और रणनीतियां हो सकती हैं। विगत बरसों में एकता परिषद ने अहिंसा के प्रसार के ऐसे कई रास्तों को अपनाया है। इन तमाम संगठनात्मक रास्तों और तरीकों के मूल में हैं – लोकतंत्र को मजबूत करना, लोगों के नेतृत्व शक्ति को प्रोत्साहित करना ताकि उनकी अपनी संगठनात्मक मजबूती से प्रभावी अभियान खड़ा हो सके। साथ ही ऐसे अभियानों के द्वारा ढांचागत हिंसा के सवालों का लोकतांत्रिक जवाब निकाला जा सके।

लोकतंत्र का निर्माण

एकता परिषद मानता है कि हम स्वयं लोकतांत्रिक हुए बिना समूह अथवा संगठन से लोकतंत्र की अपेक्षा नहीं कर सकते। इसलिए पहले अपने आप में लोकतांत्रिक आचरण का विकास करना जरूरी है। हमें एक ऐसा संगठन बनाना होगा जहां सभी सदस्यों के अधिकार समान हो। सभी सदस्य, परस्पर लोकतांत्रिक व्यवहार के प्रति सजग रहें और उसे लगातार मजबूत बनाने के लिए मिलजुलकर कार्य करें। सदस्यता आधारित एकता परिषद के संगठनात्मक ढांचे में इस बुनियादी लोकतांत्रिक व्यवहार का विशेष महत्त्व है।

लोकतंत्र का अर्थ – सामूहिक निर्णय लेने और उसे व्यवहार में लाने का सामूहिक प्रयास है। इसलिए यह जरूरी है कि समूह और संगठन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और मूल्यों को केंद्र बिंदु में रखा जाए। एकता परिषद का बुनियादी उसूल है

कि हमेशा निर्णय सामूहिक प्रक्रियाओं और भावनाओं के अनुरूप ही लिए जाएं। यह किसी भी व्यक्तिगत अथवा सामूहिक विवादों को पनपने नहीं देती। इसलिए लोकतंत्र को उसकी मूलभावना के अनुरूप समझने और अपनाने की कोशिश संगठन में होनी चाहिए।

एकता परिषद के अनुसार, लोकतंत्र का एक और बुनियादी सिद्धांत है कि – किसी भी विरोधी को 'शत्रु' ना माना जाए बल्कि आपसे अलग मत रखने वाला विरोधी एक 'भावी सहयोगी' भी हो सकता है। अहिंसा वास्तव में लोकतंत्र की रीढ़ है। इसीलिए एकता परिषद जैसे अहिंसा की विचारधारा और कार्यधारा में आगे बढ़ने वाले जनसंगठन में संगठन के भीतर के 'आंतरिक लोकतंत्र' को बुनियादी आचरण माना जाता है।

जब हम यह मानते हैं कि जनसंगठन का कार्य 'लोकतंत्र' स्थापित करना है तो इसकी शुरूआत स्वयं के संगठन से होनी चाहिए।इसके बाद ही हम समुदाय अथवा समाज में लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों की वास्तव में रक्षा कर पाएंगे।

यही भावना संगठन में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत बनाती है जो अहिंसा पर काम करने वाले हरेक संगठनों में होना चाहिए।

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि समूह अथवा संगठन निर्माण के लिए लोकतांत्रित प्रक्रिया जरूरी है ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि समूह अथवा संगठन निर्माण के लिए स्थानीय नेतृत्व तैयार करना चाहिए ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि स्थानीय नेतृत्व ही एक प्रभावी संगठन खड़ा कर सकता है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आपके अनुसार समूह अथवा संगठन निर्माण न करने वाले को आप अनसुना कर देते हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

नेतृत्व का निर्माण

सामान्यतः माना जाता है कि पढ़े–लिखे लोगों में किसी समस्या का हल निकालने की क्षमता अधिक होती है – यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों के समस्याओं का हल भी ऐसे पढ़े–लिखे बुद्धिजीवियों के पास होता है। एकता परिषद अपने गहन अनुभवों के आधार पर यह मानता है कि ग्रामीण भारत के गांवों में समस्याओं का सबसे कारगर समाधान स्वयं वहां के स्थानीय लोग बता सकते हैं।

इसलिए एकता परिषद का दृढ़ विश्वास 'ग्रामवासियों और गरीबों की ताकत' पर है। इस ताकत और सामर्थ्य का उन्हें अहसास दिलाना ही उस समाज के नेतृत्व के निर्माण का पहला महत्वपूर्ण चरण है।

एकता परिषद मानती है कि समाज अथवा संगठन में नेतृत्व के निर्माण की यह प्रक्रिया, सबसे निचले समूह या गांव के स्तर से शुरू होनी चाहिए। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 'संरचनात्मक परिवर्तन' की शुरूआत हमेशा निचले स्तरों से होती है। यही लोकतांत्रिक प्रक्रिया भी है।

एकता परिषद में इसे प्रशिक्षण के बजाए 'नेतृत्व निर्माण का शिविर' कहा जाता है। इस शिविर का मुख्य ध्येय प्रत्येक व्यक्ति को उसके 'सामर्थ्य अथवा ताकत' का अहसास दिलाना होता है।

यह शिविर अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में ही आयोजित किए जाते हैं ताकि लोग आसानी से शिविर में शामिल हो सकें। एक शिविर में औसतन 80–100 प्रतिभागियों को बुलाया जाता है जिसकी समग्रयवस्था ग्रामवासी ही मिलजुलकर करते हैं। गांव की ही पाठशाला अथवा पंचायत भवन इसके लिए व्उपयुक्त स्थान है। भवन न होने की परिस्थिति में मौसम के अनुरूप पेड़ों के नीचे भी 'नेतृत्व निर्माण शिविर' आयोजित किए जाते हैं। ऐसे शिविरों में बजाय किसी बाहरी साधन (ब्लैकबोर्ड, प्रोजेक्टर आदि) के परस्पर संवाद को शिक्षण साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

तीन दिनों के इस शिविर में पहले दिन सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे क्षेत्र के गरीबी, शोषण, अन्याय, हिंसा आदि के विषय में परस्पर संवाद करें। इस संवाद से जमीनी परिस्थिति का बिलकुल सटीक आकलन सबके सामने आता है। चूंकि यह परस्पर संवाद की प्रक्रिया का परिणाम होता है इसलिए हरेक प्रतिभागी के लिए इस विश्लेषण को स्वीकार करना आसान होता है। याद रहे – प्रत्येक स्थानों की जमीनी परिस्थितियां अलग–अलग होती हैं इसीलिए शिविर संचालक को खुले मन से प्रतिभागियों के विश्लेषण को ही मानना चाहिए। समूह अथवा प्रतिभागियों के विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है कि – उनमें से हरेक व्यक्तिगत रूप से अपनी 'गरीबी या वंचना' के कारणों को समझना शुरू करता है लेकिन साथ ही साथ उन सबके सामूहिक मत को समझना और मानना शुरू करता है। सभी प्रतिभागी और समूह गरीबी अथवा वंचना के 'संरचनात्मक' कारणों की समीक्षा भी करते हैं। अर्थात हरेक प्रतिभागी अपने निजी और सामूहिक विष्लेषण को मानना शुरू करता है। व्यक्ति से सामूहिक प्रक्रिया की ओर बढ़ने की यह महत्वपूर्ण कड़ी है।

शिविर के दूसरे दिन – इस बात पर मंथन होता है कि यदि यह मेरी अथवा हम सबकी सामूहिक समस्या है तो हमें 'कब, किससे और कैसे' संवाद

करना चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर और राजनैतिक अथवा सामाजिक स्तर पर संवाद की क्या संभावनाएं हैं। इस दौरान सामूहिक रूप से उन व्यक्तियों, संस्थानों आदि पर गहन चर्चा की जाती है कि कौन हमारे पक्ष में है, कौन और हो सकता है। किसे अपने पक्ष संवाद करके लाया जा सकता है और किसे पक्ष में लाना सबसे बड़ी चुनौती है। कैसे हम संवाद के जरिए अपने पक्ष में सहयोगियों की संख्याबल को बढ़ा सकते हैं। दूसरे दिन हम सीखते हैं कि सामूहिक मतों के आधार पर संवाद का रास्ता कैसे खोलें और सहयोगियों को कैसे अपने पक्ष में लाएं।

शविर के तीसरे महत्वपूर्ण दिन – सभी प्रतिभागी मिलकर अपने विश्लेषण और संवाद के अवसरों के आधार पर 'भावी कार्यों' की रूपरेखा तैयार करते हैं।आमतौर पर कार्यों की रूपरेखा या योजना एक से दो वर्ष के लिए बनाई जाती है। वास्तव में शिविर का तीसरा दिन सामूहिक रूप से अपने भविष्य अर्थात संगठन और अभियानों के भविष्य के निर्धारण का दिन होता है।

तीन दिनों के इस गहन शिविर में 80–100 लोगों का ऐसा स्थानीय नेतृत्व तैयार होता है जो लगभग स्वतंत्र रूप से (अथवा न्यूनतम सहयोग के साथ) अपने स्वयं के संगठन और अभियान को संचालित कर सके। एकता परिषद का अनुभव है कि यही अपने/समूह के/समाज के/संगठन के सामर्थ्य को आगे बढ़ाने का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है।

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि स्थानीय नेतृत्व का निर्माण ही परिवर्तन की बुनियाद है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या क्या आप मानते हैं कि परस्पर संवाद से अपनी और सामूहिक सामर्थ्य को पहचाना जा सकता है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि निजी और सामूहिक संवाद, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत बनाते हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्क्या आप मानते हैं कि लोकतांत्रिक व्यवहार और प्रक्रियाएं संगठन और अभियानों के लिए जरूरी हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

अभियान की तैयारी

यह समझना जरूरी है कि हमारे अभियानों का स्तर और उसमें लोगों की भागीदारी सतत बढ़ते रहना चाहिए। किसी गांव विशेष की समस्या का जहां तक संभव हो सके स्थानीय अभियानों के माध्यम से ही हल निकालने का प्रयास होना चाहिए। एकता परिषद में हमेशा स्थानीय अभियानों को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता रहा जिसका समाधान जिला अथवा राज्य स्तर पर संभव है। वर्ष 1995 से 2005 के मध्य एकता परिषद द्वारा सघन स्थानीय अभियान संचालित किए गए।

जब कुछ ढांचागत समस्याओं को पूरे देश के सामने लाने लायक संगठनात्मक तैयारी हुई तब वर्ष 2007 में एकता परिषद का पहला राष्ट्रीय अभियान 'जनादेश' संचालित किया गया था जिसमें 25000 सत्याग्रही शामिल हुए थे। इस अभियान को 500 से अधिक संगठनों ने अपना सहयोग दिया था। यह अभियान कुछ महत्वपूर्ण सफलताओं के साथ समाप्त हुआ। एकता परिषद की ओर से सरकार को 4 वर्ष दिए गए ताकि वह अपने लिखित समझौते को पूरा करे।

अर्थात हरेक अभियान में हम कुछ कदम/सफलताओं का फासला तय करते हैं। एक अभियान से सभी समस्याओं का समाधान हो जाए ऐसा कुछ परिस्थितियों में यह संभव नहीं भी होता। किसी अभियान के द्वारा तय किया गया फासला अगले अभियानों के लिए सीख और ऊर्जा दोनों देता है। जब वर्ष 2007 के लिखित समझौते को सरकार पूरा करने में अक्षम रही तभी आगामी अभियान जनसत्याग्रह 2012 की घोषणा की गई।

इस अभियान में यह आवश्यक था कि कि बढ़ी हुई ताकत के साथ अभियान हो। इसीलिए जनसत्याग्रह में 100000 लोगों को बुलाया गया और 2000 से अधिक संगठनों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया। अर्थात चौगुनी ताकत के साथ अभियान शुरू हुआ।

2000 संगठनों को जोड़नें का एक रास्ता है कि सबको एक साथ संवाद के लिए बुलाया जाए जिसकी अपनी व्यवहारिक दिक्क्तें हो सकती हैं। एक दूसरा रास्ता था कि एकता परिषद खुद चलकर उनके अभियानों में शामिल हो ताकि परस्पर गठबंधन को पूरी समझ के साथ मजबूती दी जा सके। एकता परिषद द्वारा 'जनसंवाद यात्रा' की घोषणा 2011 में हुई और फिर एक गाड़ी से 25 लोगों का दल भारत के 24 राज्यों में 350 दिनों की यात्रा के लिए निकल पड़ा। हर दिन नए–पुराने संगठनों के साथ संवाद, उनके संघर्षों में भागीदारी का नया अध्याय शुरू हुआ।

परिणामस्वरूप 2000 संगठनों का एक ऐसा राष्ट्रीय गठबंधन तैयार हो गया जो हरेक स्तर पर पूर्ण भागीदारी के लिए तैयार था।

इस गठबंधन के तीन मजबूत पक्ष थे – पहला मुद्दों, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के प्रति सहमति जिससे जनसत्याग्रह के प्रमुख मांगों पर सब एक साथ आए। दूसरा, परस्पर संसाधनों को जोड़ने की तैयारी अर्थात मिलजुलकर धन और स्थानीय संसाधन एकत्र करने की संगठनात्मक प्रक्रिया जिसके फलस्वरूप 50 लाख रुपए का सामूहिक संग्रह तैयार हुआ। और तीसरा, भावनात्मक जुड़ाव का मजबूत पक्ष जिसके लिए हरेक संगठनों के गावों

से उनके संघर्षों की कहानी और संघर्ष की थोड़ी मिट्टी एकत्र किया गया। यह मात्र संघर्ष की पवित्र मिट्टी नहीं बल्कि उनके संघर्षों की कहानी थी जो लोगों को जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम थी। इन तीनों पक्षों अथवा रणनीतियों से एक ऐसा मजबूत गठबंधन बना जिसने मिसाल कायम कर दी।

अभियान की तैयारी का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है कि हम अभियान को 'सीढ़ी अथवा विभिन्न चरणों' के नजरिए से देखें। हर अभियान हमको एक नियत ऊंचाई तक ही ले जा सकता है। यह ऊंचाई कितनी होगी या हो सकती है यह हमारे संगठन की मजबूती और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह मान लेने के पर्याप्त कारण हैं कि 'एक दिवसीय आंदोलन' अब उतने प्रभावी नहीं रह गए हैं, चूंकि सरकार अक्सर ऐसे अभियानों को परोक्ष रूप से पेयजल, स्वास्थ्य आदि व्यवस्था संबंधी मदद करती है। एकता परिषद ने आंदोलन के साधन के रूप में पदयात्रा को विगत 20 वर्षों से प्रभावी तरीके से उपयोग किया है।

पदयात्रा का सबसे सकारात्मक पक्ष यही है कि इसे न्यूनतन संसाधनों से स्थानीय लोगों के नेतृत्व में सतत अथवा लम्बे वक्त तक चलाया जा सकता है पदयात्रा में संगठनात्मक ताकत को बढ़ाने के अनेक अवसर होते हैं। अभियान को एक सीढ़ी के उदाहरण में देखने का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि हम धैर्य के साथ आंदोलन के अलग–अलग चरणों की योजना बना सकते हैं। वास्तव में गरीबी, अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण आदि ढांचागत सवालों के विरुद्ध अभियानों में दूरदृष्टि और चरणबद्ध योजना आवश्यक है।एक और जरूरी आयाम है कि अभियान में अलग–अलग प्रदर्शनों का दायरा क्या है। केवल एक केंद्रीकृत आंदोलन बहुत लोगों का ध्यान आकर्षित तो कर सकता है लेकिन उस केंद्रीकृत आंदोलन के समर्थन में दूसरे स्थानों पर सहयोगी प्रदर्शन, पूरे आंदोलन के व्यापक प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण होता है। अर्थात अभियान की रूपरेखा के निर्धारण में हमें समानांतर अथवा सहयोगी प्रदर्शनों के बारे में अवश्य नियोजन करना चाहिए। यह हमारी बढ़ी हुई ताकत को प्रदर्शित करता है। भारत का भ्रष्टाचार विरोधी अभियान इसका विशेष उदाहरण है। दिल्ली के एक केंद्रीकृत अभियान के समर्थन में पूरे देशभर में अनेक प्रदर्शन हुए जिसने अभियान को सफल बनाया।

यह बहुत जरूरी है कि हम अपने अभियान का समापन एक सकारात्मक सफलता के साथ करें। और आगामी कदम/चरण की घोषणा भी करें। वर्ष 2007 के जनादेश अभियान के अंत के साथ ही यह भी घोषणा की गयी कि यदि सरकार अपने वायदे को पूरा नहीं करती तो 2012 के जनसत्याग्रह में चौगुनी ताकत के साथ आंदोलन होगा। सकारात्मक घोषणा के साथ समापन आगामी अभियानों के लिए रणनीतिक तौर पर तो जरूरी है ही – साथ ही यह लोगों की ऊर्जा और उत्साह को भी बनाए रखता है।

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि सत्याग्रह/अहिंसक अभियान में लोगों का व्यापक प्रतिनिधित्व जरूरी है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आंदोलन की चरणबद्ध योजना होनी चाहिए?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि सहयोगी अभियान, किसी व्यापक आंदोलन को सफल बनाते हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि किसी भी अभियान का समापन सकारात्मक होना चाहिए?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

अहिंसात्मक अभियानों के सिद्धांत क्या हैं?

अहिंसात्मक अभियानों के सिद्धांत क्या हैं?

सामान्यतया अहिंसक अभियान, संविधान के मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना रखता है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ज्यादातर संवैधानिक मूल्य समाज के सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। निश्चित रूप से अभियानों का लक्ष्य वे कानून और नीतियां हो सकते हैं जो वंचितों के अधिकारों के लिए बनाए जाने के बावजूद भी ठीक से लागू नहीं हुए अथवा उसमें कोई गंभीर खामी है। और यदि ऐसा है तो संवैधानिक मूल्यों की स्थापना के लिए ऐसे कानून और नीतियों के विरुद्ध अभियान संभव है।

एकता परिषद मानता है कि ऐसा अभियान 'अहिंसात्मक सीधी कार्यवाही' के रूप में होना चाहिए ताकि हम अधिकाधिक लोगों को जोड़ सकें। इस अहिंसात्मक कार्यवाही की व्यापकता न केवल उसमे भागीदार लोगों के उत्साह को बढ़ाता है बल्कि उन अनेक लोगों को भी जोड़ता है जो अभियान से सैद्धांतिक सहमति रखते हैं।

एकता परिषद द्वारा जब 1999 में दोषपूर्ण 'वन कानूनों' के प्रति अवज्ञा की घोषणा की गई तब संगठनों सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने इस अभियान को पूर्ण समर्थन दिया था। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अहिंसक सीधी कार्यवाही हमेशा नए सहयोगियों को जोड़ने में मदद करता है। जनादेश 2007 अभियान भी 'अहिंसात्मक सीधी कार्यवाही' का सटीक उदाहरण है। एक माह की अनुशासित पदयात्रा दिल्ली पहुंचने के बाद – कानून व्यवस्था के नाम पर सभी 25000 सत्याग्रहियों को रामलीला मैदान में तालाबंद कर दिया गया। सत्याग्रहियों की ओर से यह सार्वजनिक घोषणा की गई कि यदि सरकार, समस्या को अहिंसक तरीके से हल नहीं करती तो हम भी यहीं मैदान पर डटे रहेंगे भले ही भोजन–पानी खतम हो जाए। इस घोषणा को राष्ट्रीय मीडिया ने पुरजोर तरीके से उठाया। पुलिस प्रशासन के अधिकारी भी लोगों के नैतिक दबाव और मीडिया की सक्रियता के आगे झुके और फिर उच्चस्तरीय राजनैतिक संवाद के पश्चात् सभी मांगों को केंद्र सरकार ने स्वीकार किया। अर्थात अहिंसात्मक कार्यवाही की नैतिक शक्ति ने

चित्र : एकता परिषद की जनसभा

अनेक सुप्त सहयोगियों को भी आंदोलन के पक्ष में ला दिया।

आंदोलन में विभिन्न वर्गों और विशेष रूप से वंचितों का प्रतिनिधित्व और नेतृत्व बेहद महत्वपूर्ण होता है। जनांदोलन 2018 अभियान के दौरान एकता महिला मंच (एकता परिषद की महिलाशक्ति शाखा) के द्वारा सघन जागरूकता अभियान चलाया गया जिसके परिणामस्वरूप 55 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की थी। एकता परिषद के हरेक अभियानों मे वंचित वर्गों की सघन भागीदारी और नेतृत्व को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है।

उदाहरण

1. वर्ष 2018 अमरीका के फ्लोरिडा के फोर्ट लॉडरडेल में मारजूरे स्टोनमैन डगलस हाई स्कूल के छात्रों ने मिलकर 'हथियारों के इस्तेमाल' के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण अभियान शुरू किया। छात्रों का अभियान देखते–देखते कई जगहों में फैल गया और हजारों छात्र और शिक्षक – शैक्षणिक संस्थानों में हथियारों के अनुमति के विरुद्ध आंदोलन में उतर आये। 14 मार्च को इसके समर्थन में देशव्यापी अभियान हुआ। थोड़े से वक्त में ही इस अभियान ने सफलतापूर्वक लाखों लोगों को छात्रों और शिक्षकों के मांगों से जोड़ दिया। चूंकि इस अभियान के नेतृत्व में स्वयं पीड़ित लोग सामने थे इसलिए इसकी नैतिक ताकत कई गुना बढ़ गई।

चित्र : डगलस हाई स्कूल के छात्रों का प्रदर्शन

2. एकता परिषद द्वारा वर्ष 2018 में आयोजित जनांदोलन बेहद सफल अभियान था। इस अहिंसक अभियान में अपने जल–जंगल और जमीन का अधिकार लेने के लिए भारत के 15 राज्यों से 25000 भूमिहीन लोगों के नेतृत्व में पदयात्रा हुई। इस अभियान ने पूरे देश के जमीन अधिकार आंदोलनों को एकजुट कर दिया। इस अभियान में पदयात्रा के साथ–साथ शासन–प्रशासन से संवाद हुए, शहरी लोगों से, छात्रों से और सरकारी कर्मचारियों तक से संवाद हुए जिसने आंदोलन की व्यापकता को बढ़ा दिया – और भूमिहीनों के भूमि अधिकार को लेकर समाज में भी समझ विकसित हुई।

चित्र : एकता परिषद के ग्रामीण मुखिया (जनादेश 2007)

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि आंदोलन की रूपरेखा संवैधानिक मूल्यों के विश्लेषण के आधार पर बनाई जानी चाहिए ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आंदोलनों में अहिंसात्मक सीधी कार्यवाही (धरना, प्रदर्शन आदि) को शामिल करना चाहिए ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आंदोलनों में संख्या बल एक निर्णायक पक्ष है ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि आंदोलनों में सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व को पर्याप्त महत्व मिलना चाहिए ?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

संगठित अहिंसात्मक कार्यधारा के तीन महत्वपूर्ण अंग

संगठित अहिंसात्मक कार्यधारा के तीन महत्वपूर्ण अंग

एकता परिषद के तीन दशकों की संगठनात्मक यात्रा के दौरान व्यक्ति से संगठन की ओर अहिंसात्मक कार्यधारा के तीन महत्वपूर्ण अंगों पर समानांतर रूप से ध्यान दिया गया है :

1. संघर्ष (अभियान, आंदोलन आदि)
2. रचना (स्वावलम्बन, निर्माण कार्य आदि)
3. संवाद (जन जागरूकता, प्रत्येक पक्ष से बातचीत आदि)

1. संघर्ष

समाज में प्रत्यक्ष हिंसा का जो रूप दिखाई देता है वह वास्तव में पानी में डूबे हिमखंड के सिरे की तरह है (जब कोई हिमखंड पानी में डूबा होता है तो केवल एक चौथाई हिस्सा ही ऊपर दिखाई देता है)। ऐसे में हमें उस पक्ष को भी देखने अथवा आकलन करने का प्रयास करना चाहिए जो नजरों के सामने नहीं है किन्तु हिंसा के जड़ में है। अक्सर प्रत्यक्ष हिंसा, ढांचे अथवा व्यवस्था के द्वारा होने वाले अन्याय का एक छोटा हिस्सा भर होता है। का एक छोटा हिस्सा भर होता है। विशेष रूप से अतिहिंसा वाले क्षेत्रों में यह विश्लेषण गहराई से होना चाहिए।

हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सबसे जरूरी है उन युवाओं के साथ पूरी सक्रियता के साथ काम करना – जो आसानी से हिंसा की ओर मुड़ सकते हैं। ऐसे बहुसंख्य युवाओं को अहिंसा के रास्ते पर विश्वास पैदा करना प्रथम चरण है।

दूसरे चरण में सबके साथ मिलकर पूरी व्यवस्था या तंत्र और उसके संभावित प्रतिक्रियाओं पर चर्चा और सामूहिक समझ बढ़ाने का कार्य होना चाहिए। संक्षेप में कहें तो राज्य के 'ढांचागत व्यवस्था' की सटीक पड़ताल की जानी चाहिए। ताकि अहिंसात्मक अभियानों के लिए लोकतांत्रिक रास्ता निकला जा सके। यह पूरी प्रक्रिया बहुत समय ले सकती है लेकिन अहिंसात्मक अभियान खड़े करने के लिए यह बेहद जरूरी है।

यह प्रक्रिया धीरे–धीरे अन्य संभावित/परोक्ष सहयोगियों को जोड़ने में मदद करती है। अधिकाधिक लोगों का जुड़ाव केवल संख्या के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह संघर्ष की नैतिक ताकत को बढ़ाने और मजबूत करने के लिए भी कारगर है। हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में अधिकतम लोगों का अहिंसा और न्याय के प्रति विश्वास बढ़ जाना ही हिंसा के लिए बड़ी चुनौती है। यहां जरूरी है कि हम संगठित रूप से राज्य अथवा ढांचे द्वारा किए गए उस मार्ग का विरोध करें जो हिंसा को किसी भी रूप में स्थापित करती है। एकता परिषद का दृढ विश्वास है कि – हिंसा को हिंसा से कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। बहुसंख्य लोगों के साथ ही साथ राज्य के तंत्र में भी अहिंसा के प्रति विश्वास जगाना कठिन तो है किन्तु असंभव नहीं।

संघर्ष तभी प्रभावी होता है जब अहिंसा में विश्वास करने वालों की संख्या और मत अधिकाधिक होने लगता है।

अहिंसक अभियानों की प्रख्यात शोधकर्ता एरिका चेनोविथ ने वैश्विक शोध परिणामों के आधार पर बताया है कि – किसी देश में केवल 3.5 प्रतिषत

जागरूक जनता भी मिलकर हिंसक तंत्र के विरुद्ध चुनौती खड़ी कर सकती है। उनका मानना है कि अहिंसक अभियान इसलिए भी अधिक सफल होते हैं क्योंकि इसमें जनसम्पर्कों का दायरा व्यापक और विविधतापूर्ण होता है। यह व्यापकता अक्सर – हिंसात्मक व्यवस्था के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है।

उन्होनें जिन 25 सबसे प्रभावषाली आंदोलनों का अध्ययन किया है उनमें से 20 अहिंसात्मक आंदोलन ही थे। उनका यह भी कहना है कि अहिंसात्मक अभियान औसत रूप से 2 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ते हैं जबकि हिंसात्मक अभियानों में यह औसत संख्या केवल 50 हजार तक ही होती है।

> संघर्ष की असली सफ़लता तभी है जब उसे संगठित समुदाय अपना आंदोलन मान लेता है।

उदाहरण

नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन के भूमि अधिग्रहण के विरुद्ध लोगों का अहिंसात्मक आंदोलन

विगत लम्बे समय से झारखण्ड के बड़का गांव क्षेत्र में नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन के परियोजना के लिए हुए भूमि अधिग्रहण के विरोध में अनेक गावों की महिलाओं के नेतृत्व में विगत कई वर्षो से अहिंसक धरना चल रहा है। 4 अक्टूबर 2016 को आंदोलन कर रहे लोगों पर राज्य द्वारा हिंसात्मक दमन किया गया जिसके फलस्वरूप 4 निर्दोष लोगों की मौत हो गई। इस घटना की घोर निंदा करते हुए अनेक संगठन और लोग अहिंसात्मक प्रदर्शन कर रहे लोगों के समर्थन में आ गए।

चित्र : बड़कागांव के ग्रामीणों का विरोध प्रदर्शन

प्रशन

क्या आप मानते हैं कि अव्यवस्था ही हिंसा को बढाती है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि अनुशासित संघर्ष से व्यवस्था को सुधारा जा सकता हैन हैं?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि अति हिंसाग्रस्त क्षेत्र में स्थानीय लोगों से संवाद, समाधान के लिए महत्वपूर्ण होता है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि अहिंसात्मक अभियानों में अप्रत्यक्ष सहयोगियों की बड़ी भूमिका होती है?

पूर्णतः सहमत	सहमत	कह नहीं सकते	असहमत	पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

२. संवाद

अहिंसा का दूसरा प्रमुख अंग है – संवाद। संवाद केवल अभिव्यक्ति का मसला नहीं है वरन सत्य अथवा कहे हुए बातों से दूसरों को प्रभावित करने का उपक्रम भी है। वर्ष 1999 तक एकता परिषद को अक्सर राज्य विरोधी संगठन के रूप में देखा जाता था और उसकी गतिविधियों पर विशेष निगाह भी रखी जाती थी। इसके बावजूद भी एकता परिषद संस्थापक राजगोपाल जी के नेतृत्व में लोगों ने यह तय किया कि एक लंबी पदयात्रा का आयोजन हो जिसमें मध्यप्रदेश के एक छोर (राजस्थान सीमा) से लेकर दूसरे छोर (उड़ीसा सीमा) तक 3500 किलोमीटर चला जाए। अहिंसात्मक आंदोलन के सत्याग्रही पदयात्रा गांव–गांव निकल पड़े। राज्य सरकार ने एकता परिषद के सदस्यों को प्रताड़ित किया – झूठे मुकदमें दर्ज किए गए – कुछ लोगों को हिरासत में भी लिया गया किन्तु एकता परिषद का दृढ संकल्प था कि अहिंसक सत्याग्रह के रास्ते भूमिहीन आदिवासियों और दलितों को जमीन अधिकार दिलाएंगे।

बिलकुल विषम परिस्थितियों में भी एकता परिषद ने सरकार और उसके सहयोगियों से संवाद का कोई रास्ता नहीं छोड़ा। एक वर्ष तक अलग–अलग स्तरों पर सरकार से तमाम मतभेदों

के बावजूद भी संवाद और आंदोलन दोनों जारी रहा। अंततः सत्याग्रहियों की समस्त मांगों को मानते हुए स्वयं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने यह सार्वजनिक रूप से कहा कि वो एकता परिषद के अहिंसा की ताकत को स्वीकार करते हैं और विश्वास करते हैं कि भूमिहीनों को भूमि बांटने से उनके साथ न्याय होगा।

संक्षेप में कहें तो अहिंसात्मक अभियान में संवाद बेहद सशक्त माध्यम है जिससे हम विपरीत परिस्थितियों में भी चुनौतियों को संवाद जारी रखते हुए अवसरों में बदल सकते हैं।

संवाद की शुरुआत स्वयं से होना चाहिए। पहले हम खुद संवाद के मुद्दे, भावना, अपेक्षा और दूसरे पक्ष का यथासंभव आकलन करें। इसके बाद यह प्रक्रिया अपने समूह के साथ हो। फिर सहयोगियों को संवाद के जरिए व्यापक सहमति से जोड़ा जाए। अंत में उन सबसे संवाद का रास्ता खोलें जिन्हें हम समाधानों के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। भिन्न मत रखने वाले अथवा मतभेद रखने वाले लोगों से संवाद करते समय पहले हमें मौजूदा परिस्थिति का सटीक आकलन रखना चाहिए। हमें यह भी बताना चाहिए कि समाधानों के संभावित रास्ते कौन से हैं – अंत में यह जरूरी है कि सहमतियों की प्राथमिकता का क्रम तय किए जाएं। वास्तव में यह सब आसान प्रक्रिया नहीं है। इसके लिए गहरी समझ, विनम्रता और समाधानों के प्रति विश्वास आदि गुण जरूरी है।

ढांचागत चुनौतियों को लेकर होने वाले अभियानों और संवाद की प्रक्रिया में यह समझना जरूरी है कि 'समझौते' का अर्थ पूरे अभियान की हमेशा के लिए समाप्ति नहीं है। बल्कि हर संवाद और

समझौते अभियान को अगले चरण की ओर आगे बढ़ाते हैं। अहिंसक अभियानों में संवाद की एक और खूबी है कि यह दूसरे पक्ष को विश्वास दिलाती है कि संवाद से उन्हें कोई मानसिक अथवा शारीरिक क्षति नहीं होगी। अर्थात बातचीत से हिंसा बढ़ेगी नहीं बल्कि समाप्त होगी। वर्ष 2007 में जनादेश अभियान के दौरान एकता परिषद के संवाद दल ने सरकार को यह साफ बताया कि – आदिवासी क्षेत्रों में लोगों को उनके 'जल जंगल और जमीन' के अधिकार देकर ही दमन और हिंसा को रोका जा सकता है और इसके लिए वनाधिकार कानून तत्काल लागू किया जाना चाहिए। 30 अक्टूबर को एकता परिषद और भारत सरकार के बीच हुए संवाद और समझौते के अनुसार वनाधिकार कानून लागू किया गया। जमीनी आकलन बताते हैं कि इससे कुछ क्षेत्रों में निश्चित तौर पर हिंसा और दमन में कमी आई है।

जब आंदोलन किसी संरचनात्मक समस्या (ग़रीबी, आदि) के समाधान के लिये होती है तब दोनों ही पक्षों को यह समझना ज़रूरी है कि संवाद और समझौते का अर्थ आंदोलन की समाप्ति नहीं है। वास्तव में यह संवाद और समझौता आंदोलन को और आगे ही बढ़ने का अवसर देता है।

स्वयं से संवाद

यह जरूरी है कि अहिंसा और संवाद के प्रति हमारा विश्वास हमेशा दृढ़ रहे। यह विश्वास किसी भी कठिनतम परिस्थितियों में भी ना डगमगाए। संवाद के प्रति हमारा विश्वास ही अहिंसात्मक अभियान की बेहद अहम् आधारशिला है जिसके केंद्र में हम स्वयं होते हैं। एकता परिषद में यह माना जाता है कि जिसने इस भावना को आत्मसात किया वही इसे संगठन अथवा अभियान के माध्यम से अन्य लोगों तक सफलतापूर्वक पहुंचा सकता है। यह एक सतत प्रक्रिया के रूप में हमेशा जारी रहनी चाहिए। एकता परिषद संगठन में अनेक स्तरों यह ऐसे संवाद सत्र आयोजित किए जाते हैं। यह आत्मचिंतन का विषय भी है।

चित्र : जनांदोलन 2018 की जनसभा में सहयोगी संगठनों के नेतागण

संवाद : समान सोच वाले व्यक्तियों और संगठनों से

एकता परिषद का मानना है कि अहिंसात्मक अभियान स्वाभाविक रूप से अनेक लोगों और संगठनों को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं जो धीरे–धीरे गठबंधन का आकर लेती है। यह बढ़ती हुई ताकत न केवल अहिंसात्मक अभियान को मजबूत बनाती है बल्कि संवाद और समझौते को भी व्यापकता प्रदान करती है। संगठनात्मक गठबंधन के आगे बढ़ने का तात्पर्य यह भी है कि 'सत्य और अहिंसा' की स्वीकार्यता व्यापक हो रही है।

व्यापक गठबंधन बनाना एकता परिषद की एक खास पहचान है। वर्ष 2018 के जनांदोलन में राष्ट्रीय दलित मोर्चा, राष्ट्रीय आदिवासी मंच, जलजन जोड़ो अभियान, राष्ट्रीय स्वाभिमान मंच, अन्य व्यक्तियों और संगठनों से बातच राष्ट्रीय किसान मोर्चा आदि जैसे अखिल भारतीय संगठनों के समर्थन और भागीदारी से अभियान को बेहद मजबूती और व्यापकता मिली।

एकता परिषद का दृढ विश्वास है कि राष्ट्रीय स्तर पर भूमि सुधार जैसे ढांचागत सवालों को उठाने में ऐसे गठबंधन हमेशा मददगार होते हैं। इसके प्रयास हमेशा जारी रहने चाहिए।

संवाद : सरकार और नीति निर्माताओं

अहिंसात्मक अभियानों में सरकार और नीति निर्माताओं से संवाद एक सतत प्रक्रिया है और समझौता इसका एक पड़ाव है। समझौते में जीत–हार से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है कि क्या हम कुछ कदम आगे बढ़कर सहमत हुए हैं अथवा नहीं। यह हमेशा संभव नहीं कि समझौते में किसी एक पक्ष की शत–प्रतिशत जीत हो। दरअसल समझौते 'कुछ अथवा सभी बिंदुओं पर सहमति' का समीकरण है, जिसका अर्थ अभियान का एक और चरण समाप्त होना है – अभियान समाप्त होना नहीं। विशेष रूप से जब अभियान ढांचागत सवालों के समाधान के लिए हो। विगत 12 वर्षों में एकता परिषद द्वारा आयोजित जनादेश (2007), जनसत्याग्रह (2012) और जनांदोलन (2018) अभियान और संवाद को क्रमशः आगे बढ़ानें मे सफल रहे हैं।

व्यापक अहिंसात्मक अभियानों में समझौते की एक दिशा उन बुनियादी विकल्पों पर काम करना भी है जो मान्य लक्ष्य की दिशा में हमें आगे बढ़ाते हैं। यह विकल्प सरकार और उसके प्रतिनिधियों से सतत संवाद से ही हासिल किए जा सकते हैं। संवाद की यह प्रक्रिया अभियान से पहले और अभियान के बाद भी जारी रहनी चाहिए।

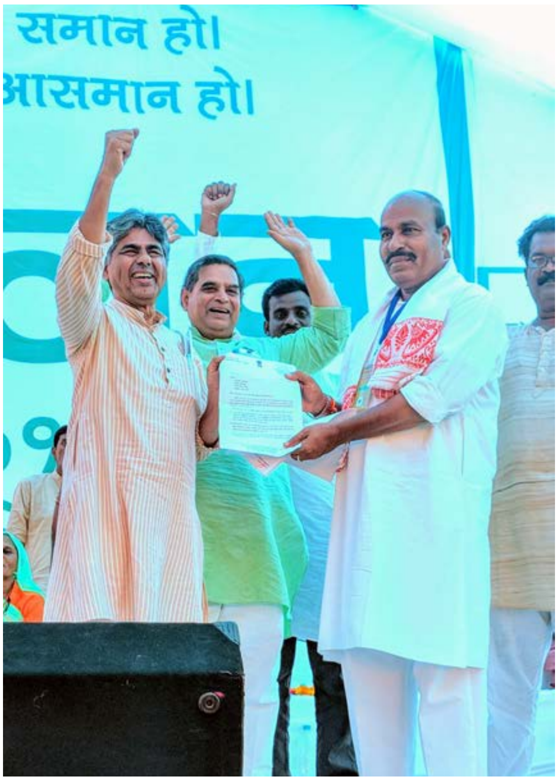

चित्र : एकता परिषद के नेतृत्व श्री राजगोपाल जी और श्री रन सिंह को केंद्रीय मंत्री श्री वीरेंद्र खटीक द्वारा भारत सरकार का पत्र देते हुये

एकता परिषद का मानना है कि नीतिगत और कानूनी मसलों में समझौते का एक महत्वपूर्ण पक्ष 'संयुक्त कार्यबल' हो सकता है। अर्थात एक ऐसा माध्यम जिसमें सरकार और अभियान के लोग मिलजुलकर समाधान निकालें।

विगत अनेक अभियानों में ऐसे ही संयुक्त प्रयासों से एकता परिषद ने अनेक सफलताएं हासिल की हैं। संयुक्त प्रयास परस्पर विश्वास को मजबूती प्रदान करते हैं जो समाधानों को जमीनी स्तर पर लागू करने में मददगार है।

एकता परिषद की मान्यता कि समझौते का मूल दोनों ही पक्षों के मध्य परस्पर विश्वास और जीत की भावना भरना है। समझौते की प्रक्रिया में 'कुछ पाने और कुछ खोने के अर्थ को समझना दोनों ही पक्षों के लिये जरूरी है। समझौते के अंतर्गत संवाद और समाधान की दिशा मे आगे बढ़ना है इसीलिये यह संभव नहीं कि एक ही समझौते से सभी समस्याओं का समाधान हो जाये।

उदाहरण

26 अप्रैल 2019 को इक्वाडोर के वॉरनि समुदाय के लोग पुयो नामक जगह में एकत्र हुए ताकि अदालत के सुनवाई में शामिल हो सकें। ये सभी इक्वाडोर के अमेजन क्षेत्र से लंबा रास्ता तय करके आए ताकि अभियान में सब मिलजुलकर शामिल हो सकें। यह अभियान अदालत के उस सुनवाई से संबंधित था जिसमें सरकार द्वारा बलपूर्वक अधिग्रहित भूमि को वॉरनि समुदाय के लोग वापस चाहते थे। महिलाओं और लोगों ने ऊंचे स्वर में गाना गाते हुए अदालत के भीतर परंपरागत वेशभूषा में अपना विरोध जारी रखा। उन्होनें यह भी कहा कि जब तक न्यायालय द्वारा प्रमाणित अनुवादक उपलब्ध नहीं होते तब तक उनका यह विरोध जारी रहेगा। अदालत के अंदर–बाहर सब लोग मिलकर ऊंचे स्वर से लगातार गाते बजाते रहे। अंततः अदालत को अपनी कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी और लोगों की बातों को मानना पड़ा।

चित्र : इक्चाडोर मे वारनि समुदाय के प्रदर्शनकारी

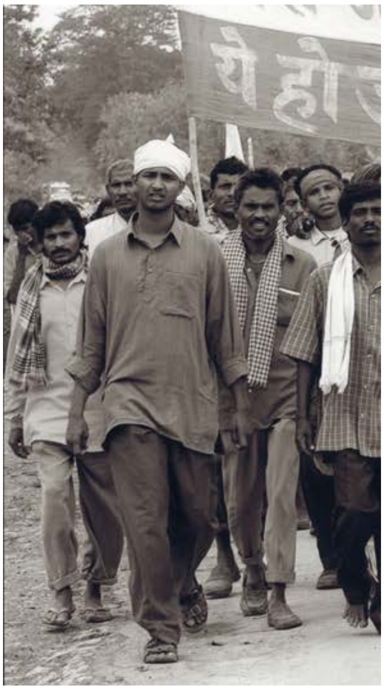

नई और पुरानी तकनीक के माध्यम से संवाद

एक ऐसे समय में जब सूचनाओं के पक्ष और विपक्ष की पड़ताल जरूरी होती है तब उसे इस मायने में व्यापक बनाया जाना चाहिये कि हम अभियान से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े और सुदूर बैठे सहयोगियों को भी जोड़ सकें। नई तकनीक के माध्यम से यह निश्चित रूप से संभव है। जन आंदोलन 2018 में एकता परिषद की मीडिया टीम नें सफलतापूर्वक इस कार्य को अंजाम दिया। एकता परिषद, आदिवासी लाइव मैटर और अंश की इस संयुक्त टीम ने थोड़े ही वक्त में सोशल मीडिया के माध्यम से देश दुनिया मे बैठे अनेक सहयोगियों को अभियान से जोड़ दिया। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम के माध्यम से 25000 सत्याग्रहियों और आंदोलन की आवाज मिनटों में सुदूर सहयोगियों तक सीधे पहुंचने लगी। इस तकनीकी के माध्यम से टीम नें जनांदोलन की आवाज को दुनिया भर में लगभग 5 लाख लोगों तक तक पहुंचा दिया।

इसके साथ ही एकता परिषद के 'एकता लोक कला मंच' के कलाकार परंपरागत लोक संस्कृति, लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनाट्य आदि का बेहतरीन इस्तेमाल ग्रामीण स्तर पर लगातार करते रहे हैं। यह माध्यम बेहद प्रभावी रूप से लोगों को जोड़ता है।

एकता परिषद का मानना है कि संवाद के सभी संभावित साधनों का इस्तेमाल आवश्यक है।

प्रशन?

क्या आप मानते हैं कि संवाद, अभियान को आगे बढ़ाने का प्रभावी माध्यम है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि संवाद के विभिन्न चरणों में मिलने वाली छोटी सफलता भी महत्वपूर्ण होती है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि अभियानों में संवाद ही सफलता हासिल करने का एक जरिया है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि समझौते के लिए जवाबदेह नेतृत्व, संवाद को तार्किक परिणामों तक पहुंचाने के लिए महत्वपूर्ण हैं?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

३. रचना/निर्माण कार्य

एकता परिषद में रचनात्मक कार्यों को संगठन निर्माण का एक अहम् पक्ष माना जाता है। रचना और निर्माण कार्य हममें सकारात्मक ऊर्जा लाती है इसलिए अभियान और संगठन में इसका खास महत्व है। एकता परिषद के अहिंसात्मक अभियान में इसे तीन स्तरों पर विभाजित किया जाता है।

सदस्यता

संगठन में सदस्यता, संगठन में सदस्यों की भागीदारी और नेतृत्व को प्रोत्साहित करती है। निश्चित रूप से यह वित्तीय आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाती है। एकता परिषद का प्रत्येक सदस्य 10 रुपए सालाना सदस्यता शुल्क संगठन को देता है। इस सदस्यता का दायरा उस सदस्य का पूरा परिवार होता है। इससे संगठन में परिवार की भावना संचारित होती है।

एक परिवार भावना सभी सदस्यों में परस्पर समानता भी लाती है और फिर यही किसी गांव में सदस्यों की ग्राम इकाई में सभी के समान अधिकार और नेतृत्व को स्वीकार्य बनती है। सदस्यों की यह ग्राम इकाई ही एकता परिषद संगठन का मूल आधार है।

ग्राम कोष और अनाज कोष

सदस्यता के साथ साथ एकता परिषद की हरेक ग्राम इकाई, सदस्यों को प्रोत्साहित करती है कि वे मिलजुलकर स्वेच्छा से धन और अनाज संगठन के करूंगा/करूंगी। लिए दान करें। वस्तुतः यह आत्मनिर्भरता की ओर एक बुनियादी कदम है – जहां ग्राम इकाई, ग्रामकोष और अनाजकोष का स्वतंत्र रूप से प्रबंधन करते हुए परस्पर जरूरतों को पूरा करने के लिए इसका उपयोग भी करती है। ग्राम कोष और अनाज कोष न केवल कठिन परिस्थितियों में ग्राम संगठन के द्वारा अपने बनाए उसूलों के अनुसार खर्च की जाती है बल्कि स्थानीय अभियान में भी धन और अनाज का अपना प्रत्यक्ष अपना योगदान देती हैं। वर्तमान में एकता परिषद के लगभग 11000 गावों में ग्रामकोष और अनाजकोष, ग्राम इकाइयों द्वारा संचालित की जा रही है।

श्रमदान

श्रमदान की मूल भावना – श्रम के मूल्यों के प्रति सम्मान है। एकता परिषद में श्रमदान का इसलिए भी विशेष महत्व है क्योंकि यह आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करता है। श्रमदान का पर्याय यह भी है कि मैं किसी व्यवस्था पर निर्भर न रहकर अपने श्रम से रचना और निर्माण के लिए जुट जाऊंगा/जाऊंगी और दूसरों को भी प्रेरित करूंगा/करूंगी।

श्रमदान का अर्थ – सड़कें बनाना अथवा बिजली के खंबे खड़े करना नहीं है। श्रमदान का प्रभावी उपयोग तालाब–पोखर निर्माण, वृक्षारोपण, जैविक खेती, सिंचाई के लिये छोटी नहरों का निर्माण आदि है जिससे समुदाय के जीविकोपार्जन के साधन और संसाधनों का विकास हो। श्रमदान का अर्थ सामुदायिक स्तर पर स्वावलम्बन के साधनों का निर्माण है। श्रमदान की प्रक्रिया निश्चित रूप से कल्याणकारी राज्य पर लोगों की निर्भरता को कम करती है और समुदाय में अपने संसाधनों के निर्माण और संरक्षण के प्रति जागरूकता को बढ़ाती है।

एकता परिषद के द्वारा विगत तीन दशकों में ऐसे सैकड़ों श्रमदान शिविर आयोजित किए गए हैं जिसके माध्यम से हजारों–लाखों लोगों को जोड़ते हुए अनेक सफल मिसालें कायम की गई हैं। कई श्रमदान शिविरों का दायरा व्यापक भी हो सकता है। वर्ष 2002–2004 के दौरान एकता परिषद द्वारा दक्षिण बिहार के कई गावों में एकसाथ श्रमदान शिविर आयोजित किए गए जिसके माध्यम से सिंचाई के सामुदायिक नहरों का विकास हुआ और हजारों एकड़ जमीन को लाभ मिला। रचना और निर्माण का कार्य अनेक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है : समाज के जीविकोपार्जन के लिए उपयोगी संसाधनों का विकास और सामुदायिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन मिलता है समुदाय को श्रमदान से सामूहिक शक्ति का अहसास होता है जो संगठन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है समाज को शांतिपूर्ण तरीके से एकजुट होकर कार्य करने का अवसर मिलता है जो निश्चित रूप से सरकार और स्थानीय प्रशासन के अंदर संगठन के प्रति सम्मान बढ़ाता है समुदाय को समाज और राज्य के प्रति अपनी जवाबदेहियों का अहसास होता है।

उदाहरण

2016 में मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले के श्यामपुरा गांव में एकता परिषद के सदस्यों ने मिलकर तय किया कि वो श्रमदान करके गांव मे एक तालाब बनाना चाहते हैं – जो सिंचाई और घरेलू उपयोग के लिए जरूरी है। श्यामपुरा विगत कई वर्षो से सूखाग्रस्त क्षेत्र रहा है। एकता परिषद के मदद से श्रमदान का कार्य प्रारंभ हुआ और 30 दिनों के कठिन परिश्रम से ग्रामवासियों ने मिलकर तालाब बना डाला। आज श्यामपुरा आसपास के गावों के लिए एक प्रेरणा है। 2019 में असम के तिनसुकिया जिले में श्रमदान करके लोगों ने हाथी घास का रोपण शुरू किया ताकि बाढ़ के कटाव को रोका जा सके। एकता परिषद में हर वर्ष ऐसे अनेक श्रमदान शिविर आयोजित करता है जिससे संगठन के द्वारा सामुदायिक संसाधन विकसित किए जा रहे हैं।

चित्र : मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले के श्यामपुरा गांव में श्रमदान से ग्रामीणों द्वारा तैयार तालाब

प्रशन?

क्या आप मानते हैं कि सदस्यता आधारित संगठन सामुदायिक भावनाओं को आगे बढ़ाने का कारगर माध्यम है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि धन दान, अन्न दान और समयदान आदि संगठनात्मक ताकत को बढ़ाता है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि श्रमदान, एकजुटता और संगठनात्मक भावना को मजबूत करता है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

क्या आप मानते हैं कि अपने वित्तीय संसाधनों का विकास, बाहरी निर्भरता को कम करता है?

■ पूर्णतः सहमत	■ सहमत	■ कह नहीं सकते	■ असहमत	■ पूर्णतः असहमत
2.5	2	1.5	1	0.5

आगामी चरण

आगामी चरण

इस मार्गदर्शिका का एक महत्वपूर्ण मकसद 'आत्म अवलोकन' है अर्थात यह जानना कि अहिंसक कार्यधारा को लेकर हमारा कार्य कितना गहन है।

प्रत्येक अध्याय के अंत में उससे संबंधित कुछ सवाल हैं। आपको इनमें से हरेक सवाल का उत्तर देना है ताकि प्रत्येक विषय के प्रति आपकी समझ और कार्यों का आकलन किया जा सके। ध्यान रहे प्रश्नों के माध्यम से अहिंसा के प्रति आपकी समझ और कार्यों का आकलन तभी सटीक होगा जब आप स्वयं को केंद्र में रखकर ईमानदारी से उत्तर देंगे।

आपके उत्तरों को यहां दिए गए तालिका में अंकित करें। कृपया आप अपने आपको बधाई अवश्य दें भले ही आपको जितना भी नंबर मिला हो। कम नंबर – आपको प्रोत्साहित करता है कि अपने प्रयासों को और अधिक निष्ठा से करें। अधिक नंबर – आपको प्रोत्साहित करता है कि आप अपनी बढ़ती हुई जवाबदेहियों को और अधिक निष्ठा से निभाएं।

अंत में आपसे विशेष आग्रह है कि हरेक 6 माह में अपने समझ और कार्यों के आधार पर 'आत्म अवलोकन' अवश्य करें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा की ओर आप सतत अग्रसर हैं।

आत्म अवलोकन आवश्यक क्यों है?

महात्मा गांधी ने कहा था कि 'आत्म अवलोकन' वास्तव में 'आत्म शुद्धि' का सबसे सरल मार्ग है। उनका मानना था कि एक सत्याग्रही के लिए आत्म अवलोकन और आत्मशुद्धि सतत आवश्यक है। आत्म अवलोकन वास्तव में अपने आपको देखने का एक दर्पण है जिसके माध्यम से हम स्वयं के विकास के स्तर को देख सकते हैं। आत्मशुद्धि या अपना सुधार, आत्म अवलोकन का अगला स्तर है। एक सतत प्रयास कि 'हम क्या होना चाहते हैं'। हम अपने स्वयं के सुधार से अपने समूह, संगठन और समाज के सुधार के लिए कैसे आगे बढ़ना चाहते हैं। एकता परिषद संगठन में हरेक सदस्य को इस मार्ग से निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है।

'अहिंसात्मक विचारधारा और कार्यधारा की पाठशाला' के रूप में एकता परिषद के सदस्य और सहयोगी सब मिलजुलकर एक ऐसे समाज और वैश्विक गांव के निर्माण मे सतत अग्रसर हैं, जो भूख–भय–अन्याय और हिंसा से मुक्त हो। आइए इस यात्रा में हम मिलजुलकर एक साथ कदम बढ़ाएं।

आयाम/अध्याय	अंक सीमा			
	7.5-10	5.6-7.4	3.5-5.5	<3.5
मनसा (विचारों में अहिंसा)				
अहिंसा एक जीवनपद्धति				
अहिंसक कार्यधारा कैसी दिखाई देनी चाहिए				
वचा (संवाद में अहिंसा)				
संघर्ष/अभियान				
संवाद/बातचीत				
रचना/निर्माण				
कर्मणा (कार्यों में अहिंसा)				
अहिंसा एक रणनीति				
लोकतंत्र का निर्माण				
नेतृत्व का निर्माण				
अभियान का निर्माण				
अहिंसा के अवयव/अंग				

अहिंसा की विचारधारा और कार्यधारा : स्वयं का आकलन

अंक सीमा	आप किस स्तर पर हैं	आपको किस स्तर पर जाना है
75-100	परिपक्व विचार और कार्य	समाज में अन्य लोगों को प्रेरणा दीजिए
56-74	उच्च विचार और कार्य	समूह और संगठन के स्तर पर अन्य लोगों को प्रोत्साहित कीजिए
35-55	प्रगतिशील विचार और कार्य	अहिंसा के विचारधारा और कार्यधारा को अधिकाधिक अपनाइए
35 से कम	साधारण विचार और कार्य	अपने स्वयं के प्रति और अधिक जवाबदेह बनें

CYCLE YATRA
NATIONAL INTEGRATION
PEACE & NON-VIOLENCE